अंशु की कविता

छात्रा, एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर, हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

बेड़ियाँ

ये पाबंदियां, ये बंदिशें
तोड़नी तो है हमें
ये परिवार, ये रिश्ते
ना ही छोड़ने है
ना ही तोड़ने है

फिर कैसे संभव है ये
बिना कुछ तोड़े
बिना कुछ खोए
मिले कैसे अधिकार

टूटना और टूटकर बिखर जाना
ये नियम तोड़ना है
लड़की है इसलिए सहना है
ये धर्म छोड़ना है

'लड़की है समझौता करना पड़ता है'
ये सोच बदलनी होगी
बदलाव तो चाहते हैं
पर रिश्ते तोड़कर नहीं
- बन्धन जोड़कर
परिवार छोड़कर नहीं
- सबको साथ लेकर

बेटियां अपनो में ही
जिंदगी का मकसद ढूंढ़तीहैं
अपनों के लिए सपने तोड़ देती हैं
ये त्याग, ये बलिदान
अब रोकना होगा
अब हम भी उड़ेंगे
और छूएंगे आसमां
कुछ नहीं, बस करके दिखाना होगा
उड़ने दो, देख लिया पिंजरे का दुःख
अब तो दुनिया देखने दो

ना काटो पंख हमारे
हम भी हैं एक प्राण
बोझ नहीं बनना
पैरों पर खड़ा होना है

बेटी को बेटा बोलकर नहीं
बेटी को बेटी बोलकर गर्व करो
पैरों में बेड़ियॉं, हाथों में कलम
जाओ तुम्हें उड़ने दिया
ये कैसा इंसाफ हुआ
बेड़ियॉं तोड़े ना टूटें
ये कैसा साथ हुआ

क्यूँ करें अहसान बलिदान?
क्यूँ सहे अत्याचार?
क्यूँ सुनें हर बात तुम्हारी?
क्यूँ नहीं सुननी तुम्हें हमारी?
क्यूँकि लड़की हैं?
क्यूँ? लड़की को दर्द नहीं होता?
उसका रक्त नहीं बहता?
उसमें भावनाएं नहीं होतीं?
उसका दिल पत्थर का है?
या उसने पत्थर बना लिया है?
वह खून के आंसू रोती
बस फर्क इतना होता है
वह किसी को दिखाती नहीं
अपने आंसूओं में छूपे लाल रक्त

इस दुनिया में वो दिन लाओ
जब बेटी की दुःख की नहीं
सुख की कहानी लिख सको
कलम उठाकर सिर्फ लिखने
से उद्धार नहीं होगा
बदलाव लाना होगा

चरित्र में, सोच में
समझ में, विचार में

ये तो बस शुरूआत है
मिलों दूर जाना है
एक ऐसी उड़ान भरनी है
जहां कोई लड़की के पंख न काट सके

जहां न हो पाबंदियां,
न हो बंदिशें
न रुकावटे, न झुकावटे, ना समझौते
ना बलिदान, ना पिंजरे
बस अपने और सपने
और उन सपनों को
पूरा करने की हिम्मत
उड़ान भरने की ताकत

हर्षराज की कविता

छात्र, बी.ए. तृतीय वर्ष, हिन्दी विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर,
छत्तीसगढ़

कौन समझे रिश्ता

कौन समझे क्या रिश्ता हमारा
हम दोनों का रिश्ता क्या है
सारी उम्र इन आँखों में
एक ही सपना याद रहा,
सदियाँ बीत गयी
वो लम्हा याद रहा,
कौन रामझे रिश्ता हमारा
कुछ ना हो कर भी
बहुत कुछ है
हमारा ना जन्मों का बंधन
ना उम्मीद का दामन
ना पाने की चाहत
ना विछड़ने का गम
कुछ तो रिश्ता हमारा
कौन समझे क्या है
आपसे हमारा ये वादा है
साथ देगें हम हमेशा
यकीन ना हो तो हमें
आजमा लीजिए जब
तक ये जिंदगी है
साथ देगे हम हमेशा वादा है
ये हमारा आपसे
आपका आना-जाना मेरी
जिंदगी मै दुनिया को नजरों से परे !
अनाम सा रिश्ता हमारा सारी
महफिल भूल गए बस वो पल, याद रहा.
तोड़े से भी ना टूटे ऐसा
अठूठ रिश्ता हमारा
कौन समझे क्या है
रिश्ता हमारा जो हमारे
हर बात में सही बनाती है
चाहें क्यों ना गलती मेरी हो
जो हमारे हिस्से के दुखों को भी कर लेती है
आसानी से सहन कौन समझे क्या है
रिश्ता हम प्यार से बहन कहते हैं
बहन कितनी भी नखरे वाली हो
भाई से ज्यादा से कोई नखरे सहन नही कर पाता
भाई के जीवन में बहन जन्नत का दिया हुआ है
जिसके होने से हर घर में रौनक है